इण्डियन
थिऑसफिस्ट

मार्च 2026 **खण्ड 124** **अंक 3**

विषयवस्तु

एक कदम आगे 5–6
प्रदीप एच. गोहिल

असतो मा सद्गमय 7–9
दीपक पंड्या

दुनिया भर में थियोसोफी के 150 साल पूरे होने का जश्न 10–13
राजीव गुप्ता और मानसी भगत

थियोसोफिकल सोसाइटी के जरिए चार्ल्स वेबस्टर लेडबीटर का मानवता के लिए योगदान 14–20
खुशबू अशोककुमार मिश्रा

समाचार और नोट्स 21–26

सम्पादक प्रदीप एच गोहिल
अनुवादक शिव बरन सिंह

थिऑसफिकल सोसायटी ऐसे शिक्षार्थियों से मिल कर बनी है जो संसार के किसी भी धर्म से संबंध रखते हैं या फिर संसार के किसी भी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं, और जो सोसायटी के उद्देश्यों के अनुमोदन के कारण सोसायटी से जुड़े हुये हैं, धार्मिक विरोधों को दूर करने और अच्छी मानसिकता वाले लोगों को एकत्रित करते हैं जिनकी धार्मिक धारणा कुछ भी क्यों न हो, या जिनकी आकांक्षा धार्मिक सत्य को जानने, और अपने अध्ययन के परिणामों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। उनके एकत्व का बंधन कोई समान विश्वास का व्यवसाय नहीं है बल्कि समान खोज और सत्य तक पहुंचने की आकांक्षा है। वे मानते हैं कि सत्य को अध्ययन, मनन, जीवन की पवित्रता, उच्च आदर्शों के प्रति उनकी श्रद्धा, और जो सत्य को ऐसा पारितोषिक मानते हैं जिसके लिये प्रयास किया जाना चाहिये, न कि ऐसी रूढ़ि जो अधिकार से लागू की जाये। वे मानते हैं कि विश्वास व्यक्तिगत अध्ययन और स्फुरणा का परिणाम है न कि उससे सम्बन्धित किसी वस्तु से, और उसका आधार ज्ञान होना चाहिये न कि मान्यता। वे सभी के प्रति सहिष्णु होते हैं, यहां तक कि असहिष्णु के प्रति भी, किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं बल्कि कर्तव्य के रूप में और वे अज्ञान को मिटाना चाहते हैं, उन्हें दंड दे कर नहीं। वे सभी धर्मों को दैवी प्रज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं, और इनका तिरस्कार और धर्म परिवर्तन को नहीं उनके अध्ययन को वरीयता देते हैं। शांति के प्रति वे सतर्क हैं, जैसे सत्य उनका लक्ष्य है।

थिऑसफी ऐसे सत्यों का संग्रह है जो सभी धर्मों का आधार बनाती है, और कोई इस पर अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह ऐसा दर्शन प्रस्तुत करती है जो जीवन की समझ प्रदान करता है और जो न्याय और प्रेम को दर्शाता है, जो विकास का मार्गदर्शन करता है। यह मृत्यु को उसके उचित स्थान पर रखती है, जो अनन्त जीवनों में पुनरावृत्ति करने वाली क्रिया है, और एक अधिक पूर्ण और अधिक प्रकाशमान अस्तित्व है, यह संसार में अध्यात्म–विज्ञान को पुनर्प्रतिष्ठित करती है, मनुष्य को शिक्षा देती है कि वह स्वयं आत्मा है और मन और शरीर उसके सेवक हैं। यह ग्रन्थों और धार्मिक सिद्धांतों के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करती है और इस प्रकार मेधापूर्वक उनकी पुष्टि करती है क्यों कि वे स्फुरणा की दृष्टि में सदैव उचित हैं।

थिऑसफिकल सोसायटी के सदस्य इन सत्यों का अध्ययन करते हैं और थिऑसफिस्ट उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो अध्ययन करना चाहता है, सहिष्णु होना चाहता है, जिसका लक्ष्य उच्च है और पूरी शक्ति से कार्य करना चाहता है, उसका सदस्य के रूप में स्वागत है, और उसका सच्चा थिऑसफिस्ट बन जाना उसी पर निर्भर करता है।

प्रदीप गोहिल

एक कदम आगे

दुख को असलियत और हमारी उम्मीदों या इच्छाओं के बीच अंतर से होने वाला इमोशनल दर्द समझा जा सकता है। इस पर काबू पाने और शांति पाने के लिए अक्सर जो है उसे स्वीकार करना अपना नज़रिया बदलना और माइंडफुलनेस की प्रैक्टिस करना शामिल होता है।

भगवान बुद्ध भगवान नहीं थे। वह एक इंसान थे और उन्होंने भी हमारी तरह ही दुख झेला। पैंतालीस साल तक उन्होंने बार–बार कहा "मैं सिर्फ़ दुख और दुख को बदलने की शिक्षा देता हूँ"। जब हम अपने दुख को पहचानते और मानते हैं तो हम उसे देख पाएँगे पता लगा पाएँगे कि यह किस वजह से हुआ है और ऐसा कोई तरीका सोच पाएँगे जो इसे शांति खुशी और आज़ादी में बदल सके। दुख ही वह ज़रिया है जिसका इस्तेमाल बुद्ध ने खुद को आज़ाद करने के लिए किया था और इसी से हम भी आज़ाद हो सकते हैं।

दुख का सागर बहुत बड़ा है लेकिन अगर आप पीछे मुड़कर देखें तो आपको ज़मीन दिख सकती है। आपके अंदर दुख का बीज मज़बूत हो सकता है लेकिन तब तक इंतज़ार न करें जब तक आपके पास और दुख न हो और फिर खुद को खुश होने दें। जब बगीचे में एक पेड़ बीमार हो तो आपको उसकी देखभाल करनी होगी लेकिन सेहतमंद पेड़ों को नज़रअंदाज़ न करें। दिल में दर्द होने पर भी कोई ज़िंदगी के कई अजूबों का मज़ा ले सकता है – सुंदर सनसेट बच्चे की मुस्कान फूल और पेड़। तकलीफ़ सहना काफ़ी नहीं है। किसी को अपनी तकलीफ़ में कैद नहीं होना चाहिए।

अगर किसी को भूख लगी है तो वह जानता है कि खाना मिलना एक चमत्कार है। अगर किसी को ठंड लगी है तो वह गर्मी की कीमत जानता है। जब कोई तकलीफ़ झेलता है तो वह जानता है कि मौजूद स्वर्ग की चीज़ों की तारीफ़ कैसे की जाए। किसी को अपनी तकलीफ़ को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए और ज़िंदगी के अजूबों का मज़ा लेना नहीं भूलना चाहिए अपने लिए और दूसरों के फ़ायदे के लिए भी। तकलीफ़ को कई तरीकों से समायोजित और कम किया जा सकता है जिसमें स्वीकार करना माइंडफुलनेस डिटैचमेंट और स्वस्थ जीवनशैली के विकल्प, सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना, कृतज्ञता का अभ्यास करना और दूसरों की मदद करना भी दुख से मुक्ति पाने और खुशहाली की भावना में योगदान देने का एक तरीका हो सकता

है। स्वीकृति महत्वपूर्ण है क्योंकि व्यक्ति को अपनी स्थिति की वास्तविकता को स्वीकार करना चाहिए और बिना किसी पूर्वाग्रह के इसे अपनाने का प्रयास करना चाहिए, भले ही यह दर्दनाक हो। सचेतनता व्यक्ति को वर्तमान क्षण पर ध्यान देने में मदद करेगी, अतीत या भविष्य के विचारों में उलझे बिना, जो दुख की भावनाओं को बढ़ा सकते हैं। इसी तरह, परिणामों या संपत्तियों से लगाव छोड़ दें, क्योंकि उनसे चिपके रहने से और अधिक कष्ट हो सकता है।

दुःख एक शक्तिशाली शिक्षक हो सकता है, जो विकास और परिवर्तन के अवसर प्रदान करता है।यद्यपि दर्द और विपरीत परिस्थितियाँ अपरिहार्य हैं, दुःख से मुक्ति का मार्ग जीवन का अर्थ खोजने और स्वयं तथा दूसरों के प्रति करुणा का अभ्यास करने में निहित है। अंतः, दुःख से मुक्ति का मार्ग आत्म–खोज और सचेत जीवन की यात्रा है। स्वीकृति को अपनाकर, अर्थ खोजकर और करुणा का अभ्यास करके, हम आंतरिक शांति और लचीलेपन की भावना विकसित कर सकते हैं, जो हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाती है। दुःख को समाप्त करने के आठ तरीके हैं, 'सही समझ, सही इरादा, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता और सही एकाग्रता'।

दुःख के बिना कोई विकास नहीं कर सकता। इसके बिना, व्यक्ति को वह शांति और आनंद नहीं मिल सकता जिसका वह हकदार है। दुःख से भागना नहीं चाहिए। इसे अपनाएं और संजोएं। समझ और करुणा से व्यक्ति अपने हृदय के घावों और दूसरों के घावों को भर सकेगा। भगवान बुद्ध ने दुख को एक महान सत्य कहा क्योंकि हमारे दुख में हमें मुक्ति का रास्ता दिखाने की क्षमता होती है। अपने दुख को अपनाओ और उसे शांति का रास्ता दिखाने दो। यह तुम्हारी जिंदगी में एक कदम आगे होगा।

दीपक पांड्या*

असतो मा सद्गमय

"मुझे झूठ से सच की ओर ले चलो"

हम भगवान से प्रार्थना कर सकते हैं कि वह हमें झूठ से सच की ओर ले जाए –"असतो मा सद्गमय" – फिर भी यह प्रार्थना सिर्फ मंत्र पढ़ने तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, इसे हमारी चेतना में एक जीती–जागती जागरूकता के रूप में जागना चाहिए। सच की ओर बढ़ने का मतलब है कि पहले यह समझना कि 'झूठ' क्या है और 'सच' क्या है। बिना समझ के, प्रार्थना भी एक सुखद नींद बन सकती है। सच का रास्ता मुश्किल हो सकता है, लेकिन वही मुक्ति का रास्ता है।

झूठ क्या है? झूठ सिर्फ झूठ बोलना या धोखा फैलाना नहीं है। यह तब भी सामने आता है जब हम पक्का यकीन कर लेते हैं कि जिसे हम सच मानते हैं, वही आखिरी सच है, और हम उसके आगे देखने को तैयार नहीं होते। झूठ डर, कल्पना, भेदभाव और अंधी सोच से बुना हुआ एक साइकोलॉजिकल जाल है। इसके अंदर, कोई सुरक्षित महसूस कर सकता है – क्योंकि कोई सवाल नहीं, कोई शक नहीं, कोई पूछताछ नहीं। लेकिन जहाँ कोई सवाल नहीं है, वहाँ सच नहीं आ सकता।

सच कोई सोच, राय या विश्वास नहीं है। सच एक जीता–जागता अनुभव है। यह मन की शांति में, बिना किसी आकार के एहसास में खुद को दिखाता है। अगर हम इसे समझने की कोशिश करते हैं, तो यह फिसल जाता है, फिर भी जब मन बिना भेदभाव के, निडर और खुला होता है, तो सच अपने आप सामने आ जाता है। इसलिए, सच की ओर बढ़ने के लिए पहली शर्त है समझदारी और अंदर से न्यूट्रल रहना।

भगवान के बारे में हमारे विचार भी काफी हद तक कल्पना और सोच पर आधारित होते हैं। जो इंद्रियां आसानी से समझ सकती हैं, हम उसे आसानी से मान लेते हैं। लेकिन जो इंद्रियों से परे है – जो शब्दों से परे है – मन उसे इमेज और रूप बनाकर समझने की कोशिश करता है। ये कल्पनाएं सुंदर मूर्तियां, शानदार मंदिर, अलग–अलग धार्मिक पंथ या बड़े बड़े रीति–रिवाज बन सकती हैं। इंसान का मन अनजान को किसी जानी–पहचानी चीज में बदलना चाहता है। यह दिमागी प्रोसेस नेचुरल है, हालांकि, जब हम इन सोचे हुए रूपों को आखिरी सच्चाई समझ लेते हैं, तो झूठ शुरू हो जाता है।

---

* हरजीवन आश्रम लॉज के सदस्य, टी.एस., कडोली, गुजरात फेडरेशनय और इंडियन सेक्शन के नेशनल लेक्चरर, टी.एस.

जे. कृष्णमूर्ति ने इस भेद को समझाने के लिए "स्थानीय देवता" (लोकल भगवान) शब्द का प्रयोग किया। यह वाक्यांश कुछ लोगों को अटपटा लग सकता है, फिर भी इसमें गहरा अर्थ निहित है। एक "स्थानीय देवता" वह ईश्वर है जिसे मनुष्यों द्वारा गढ़ा गया है – संस्कृति, परंपरा, भय, आशा और इच्छा से आकार दिया गया है। प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक समुदाय, प्रत्येक संप्रदाय अपनी परिस्थितियों के अनुसार ईश्वर की अपनी छवि बनाता है। अक्सर, वह ईश्वर हमारे अपने मन का प्रतिबिंब मात्र बनकर रह जाता है।

गलती कहाँ है? गलती तब होती है जब हम इस "स्थानीय देवता" को यूनिवर्सल और पक्का सच मान लेते हैं, और बाकी सभी सोच को झूठा मान लेते हैं। वहीं से झगड़े , बँटवारे और झगड़े शुरू होते हैं। भगवान, जो एकता की निशानी है, अलगाव की वजह बन जाता है – क्योंकि हमने रूप को सच समझ लिया है और रूप से परे के सार को भूल गए हैं।

सच को खोजने के लिए, रूप और सार के बीच का फर्क समझना जरुरी है। रूप समय और जगह के हिसाब से बदलते हैं, सार बदलता नहीं है। रूप अलग–अलग तरह के होते हैं, सार एकता को दिखाता है। अगर हम सिर्फ रूप तक ही सीमित रहते हैं, तो हमारा ध्यान बाहर की तरफ रहता है – मूर्तियों, मंदिरों, धर्मग्रंथों, रीति–रिवाजों पर। लेकिन जब हम सार की ओर मुड़ते हैं, तो हमारा ध्यान अंदर की ओर जाता है – चेतना, जागरूकता और निष्पक्षता की ओर।

इंद्रियों से परमात्मा को समझना मुश्किल है, क्योंकि इंद्रियां सीमित हैं। आंखें सिर्फ दिखने वाली चीजें देखती हैं, कान सिर्फ आवाज सुनते हैं। फिर भी ईश्वर में दिखने और न दिखने दोनों चीजें शामिल हैं। इसलिए, मन उसे समझने के लिए रूप बनाता है। शुरू में, ऐसे निर्माण मददगार साधन के तौर पर काम कर सकते हैं, लेकिन अगर साधन ही साध्य बन जाए, तो रास्ता खो जाता है।

कृष्णमूर्ति अक्सर कहते थे कि सच को किसी तय रास्ते से नहीं पाया जा सकता। "सच एक बिना रास्ते की जमीन है।" इसका मतलब है कि सच किसी खास सिस्टम, तरीके या पंथ तक सीमित नहीं है। जब हम मान लेते हैं कि कोई खास रास्ता ही आखिरी रास्ता है, तो हम अनजाने में सच को सीमित कर देते हैं और सच को सीमित करना उसे असत्य में बदलना है।

यहां प्रार्थना का मतलब और साफ हो जाता है। अगर हमारी प्रार्थना है, " हे प्रभु, मुझे मेरे विश्वासों के किले में मजबूत करो", तो ऐसी प्रार्थना हमें सच से दूर ले जाएगी। लेकिन अगर हमारी प्रार्थना है, " हे प्रभु, मुझे सच देखने की हिम्मत और समझ दो", तो वह प्रार्थना अंदर का बदलाव ला सकती है। झूठ से सच की ओर बढ़ना मन को उसका स्वयं का बंधन है। यह स्वतंत्रता किसी बाहरी व्यक्ति द्वारा नहीं दी जा सकती। एक शिक्षक, एक धर्मग्रंथ या एक परंपरा

मार्ग दिखा सकती है,लेकिन हमें उस पर स्वयं चलना होगा।

सत्य की अनुभूति व्यक्तिगत होती है, यह विरासत में नहीं मिल सकती। खोज तभी शुरू होती है जब हम स्वीकार करते हैं कि हमारा ज्ञान सीमित है। अहंकार कहता है, ''मैं सब कुछ जानता हूँ।'' विवेक कहता है, ''अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है''। "अहंकार एक"स्थानीय देवता" बनाता है, विवेक अज्ञात के समक्ष नतमस्तक होता है।

सच हमेशा अच्छा नहीं होता। अक्सर यह कठोर होता है, क्योंकि यह हमारे भ्रम को तोड़ देता है। फिर भी उसी टूटने से असली शांति पैदा होती है। अगर हम सिर्फ वही चुनते हैं जो सुकून देने वाला और अच्छा हो, तो हम सच के बजाय दिलासा चुनते हैं।

इसलिए, झूठ से सच की ओर जाने के लिए प्रार्थना करने से पहले, हमें खुद से पूछना चाहिए; क्या मैं सच में सच के लिए तैयार हूँ? "क्या मैं अपने विश्वासों, कल्पनाओं और डर पर सवाल उठाने के लिए तैयार हूँ? " अगर जवाब हाँ है, तो सफर शुरू हो सकता है।

भगवान के अलग–अलग रूप इंसानी कल्चर की प्रचुरता को दिखाते हैं। लेकिन इन रूपों के पीछे एक ही चीज को पहचानना ही स्पिरिचुअल मैच्योरिटी है। जैसे कई नदियाँ आखिर में समुद्र में मिल जाती हैं, वैसे ही अलग–अलग धार्मिक रूप एक यूनिवर्सल चेतना की ओर इशारा करते हैं। अगर हम नदियों पर झगड़ते हैं और समुद्र को भूल जाते हैं, तो यात्रा का मतलब ही खो जाता है।

आखिरकार, सच कोई बाहरी चीज नहीं है। यह वह रोशनी है जो हमारी अपनी चेतना के अंदर खुद को प्रकट करती है। जब मन डर, भेदभाव और भ्रम से मुक्त होता है, तो सच अपने आप चमक उठता है। भगवान से हमारी प्रार्थना इस अंदरूनी रोशनी को पहचानने की क्षमता के लिए होनी चाहिए।

झूठ से सच की यात्रा बाहरी बदलाव से नहीं, बल्कि अंदरूनी जागृति से शुरू होती है। ''लोकल भगवान'' की सीमाओं को पहचानना और यूनिवर्सल चेतना की ओर बढ़ना – यही सच्ची आध्यात्मिक तरक्की है। सच शायद सभी को पसंद न आए, लेकिन जो लोग इसे अपनाते हैं, वे अंदर गहरी शांति और मुक्ति का अनुभव करते हैं।

आइए प्रार्थना करें; हे सुप्रीम चेतना, हमें सच की प्यास, झूठ को पहचानने की समझ और हमारे मन की बनावट से परे सार को अनुभव करने की हिम्मत दें। तभी प्रार्थना सिर्फ शब्द नहीं रहेगी और खुद जीवन बन जाएगी।

राजीव गुप्ता* और मानसी भगत**

दुनिया भर में थियोसोफी के 150 साल पूरे होने का जश्न मना रहे हैं।

'मुझे जाने दो, मैडम', कर्नल हेनरी ने कहा और मैडम ब्लावात्स्की को सिगरेट जलाने के लिए लाइट दी। वह धुआं जिसने हमेशा रहने वाली आग जलाई और जिंदगी के मिशन के सफर को शुरू किया, जिससे 17 नवंबर 1875 को न्यूयॉर्क में थियोसोफिकल सोसाइटी का मुख्यालय बना, जो सदी के आखिरी हिस्सों में बना, जिसने आज की भाषा में पुराने ज्ञान की शिक्षाएँ दी हैं।

कर्नल हेनरी स्टील ओलकोट कहते हैं कि अजीब परिस्थितियां, 1874 में, संस्थापक थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना से एक साल पहले, संस्थापकों की मुलाकात के लिए दैवी योजना में इतने कर्म के हिसाब से थे। इसमें एक आकर्षक, अमीर हास्ययुक्त रूसी 43 साल की मैडम हेलेना पेट्रोव्ना ब्लावात्स्की शामिल हुईं, जिनके विचार मूल और विचार पर मजबूर करने वाले थे और एक डिसिप्लिन्ड एक्स–मिलिट्री, 42 साल की प्रैक्टिसिंग वकील और पत्रकार, जो उस समय यूएसए में फैल रहे स्पिरिचुअलिज्म से जुड़ी घटनाओं की जांच करने में गहरी दिलचस्पी थी।

दोनों ने मिलकर विरोध, आलोचना, प्रयासों और विरोधियों का सामना किया, जिनकी संख्या स्पिरिचुअल हमदर्दों से ज्यादा थी। कर्नल ओल्कोट अपनी ऑटोबायोग्राफी 'ओल्ड डायरी लीव्स' में लिखते हैं, ''लेकिन यह आम हमदर्दी की आवाज थी, आत्मा का आत्मा से आकर्षण था।'' यह आंदोलन जो उन्होंने 1875 में थियोसोफिकल सोसाइटी के घंटों से शुरू किया था, उस समय एक छोटा सा सर्कल था और 150 सालों में यह पूरी दुनिया में फैल गया है, जो भाईचारे की भावना से 60 से ज्यादा देशों में दुनिया भर में मानवता के लिए पूर्वी शिक्षाओं को फैलाने का जश्न मनाता है।

तो आइए हम इस बात पर ध्यान दें कि जब हर तरफ से आध्यात्मिक शिक्षाएँ आ रही हैं, तो यह आज के समाज को क्या ज्ञान देता है।

थियोसोफी द्वारा प्रचारित सिद्धांत कर्म, पुनर्जन्म, विकास, एकता और आवधिकता के नियम हैं।जब भी सौर मंडल की यात्रा अव्यक्त अवस्था से प्रकट (व्यक्त) अवस्था की ओर शुरू होती है, तो ये नियम सभी स्थानों,परिस्थितियों और सभी प्राणियों पर लागू होते हैं, जिनमें खनिज, वनस्पति,पशु और मानव जगत शामिल हैं। इसलिए, प्रकृति के नियम जिनमें कार्मिक नियम भी शामिल

---

* राष्ट्रीय व्याख्याता और दिल्ली थियोसोफिकल फेडरेशन के अध्यक्ष''

** सचिव, दिल्ली थियोसोफिकल फेडरेशन

हैं, विकास के नियम की व्यापक योजना के तहत अपनी स्वाभाविक प्रकृति के अनुसार कार्य करना शुरू कर देते हैं, ताकि परिस्थितियाँ और स्थितियाँ प्रकट हो सकें।

थियोसॉफी प्रकृति के नियमों के बारे में सिखाती है। प्रकृति बेतरतीब नहीं है और न ही संयोग से काम करती है। प्रकृति की ताकतें एक तरीके में पूरे ऑर्डर के साथ काम करने के लिए अलाइन होती हैं, जिन्हें मापा जा सकता है। ये माप एक सेकंड के एक हिस्से तक भी सटीक होते हैं। इसलिए, इंसानियत निश्चित रूप से प्रकृति के इन नियमों से चलती है और इन ताकतों को तब तक नहीं हरा सकती जब तक कोई इंसान खुद को सही वैज्ञानिक अध्ययन और समझ के साथ अलाइन नहीं करता, तब प्रकृति के नियमों को ज्ञानी लोग सत्यापित कर सकते हैं।

दुनिया में अन्याय और नाइंसाफी को केवल कर्म के इस नियम से ही समझा जा सकता है जो सटीक सत्यापित सटीकता के साथ काम करता है। कर्म का यह नियम थियोसॉफी में सिखाया जाता है और जब इसे लागू किया जाता है, तो यह दुनिया में दिखने वाली बेतरतीबी और अव्यवस्था को समझाता है, जैसा कि हम इसे देखते हैं। काम करने वाले पाँच बड़े नियमों में से, कर्म का नियम, इसकी तेजी और सटीकता जब बाहर से पैदा हुई ताकतें अपने शुरुआती बिन्दु से वापस केंद्र में एक साथ आती हैं, इसे अच्छी तरह से समझना चाहिए। अगर कर्म के नियम की थोड़ी —बहुत समझ भी हो जाए, तो इंसान को अपने अंदर कुछ हद तक शांति और तालमेल मिल जाता है।

अब यह इंसान इस स्थिति में होता है कि वह अपने जीवन में आने वाली अलग–अलग स्थितियों पर कैसे प्रतिक्रिया करेगा, कि इस पर नियंत्रण कर सके। इस तरह, वह प्रकृति के नियमों के अनुसार अपना जीवन जी पाता है।

इंसानों के बनाए नियम देश के हिसाब से तय होते हैं और हम हालात और परिस्थितियों में बदलाव के कारण चिंता में जीते हैं।

इंसानों के बनाए नियम उस सभ्यता की मौजूदा जरुरतों के हिसाब से काम करते हैं, जिसके लिए दूसरों के साथ रिश्ते में रहने पर बाहरी हालात लगातार बदलते रहते हैं। इसलिए, जब हम ऐसे समाज में रहते हैं जहाँ बदलाव ही नियम है, तो हमारे पास टिके रहने के लिए कोई असली आधार नहीं होता।

प्रकृति के नियम कभी नहीं बदलते और हम जो ताकतें पैदा करते हैं, उनका नतीजा हमारे नियंत्रण में होता है। इससे हमें बाहरी हालात बदलने पर होने वाली चिंता से आजादी मिलती है क्योंकि प्राकृतिक नियमों का पालन करना ही

हमारी सफलता की कहानी है।

प्रकृति के नियम पक्के हैं और प्रकृति के नियमों के हिसाब से जीने का चुनाव करने से सफलता पक्की है क्योंकि कारणों की गणना से निवेश (इनपुट) और उसके आखिरी नतीजे का आधार पूरा होगा।

उदाहरण के लिए, इंसान के शरीर का काम करना प्राकृतिक नियमों पर काम करता है, और इस अध्ययन ने मेडिकल साइंस को कई बीमारियों को ठीक करने में मदद की है।

मानव शरीर के जीनोमिक अध्ययन में गहन शोध के साथ, स्वास्थ्य और रोग के और भी सत्य सामने आते हैं। इसी प्रकार, प्रकृति के नियमों का गहन अध्ययन मनुष्य के जीवन चक्र के सत्यों को उजागर करेगा। इस प्रकार, ज्ञानवान व्यक्ति के लिए, कर्म एक मार्गदर्शक शक्ति बन जाता है जिसके द्वारा ऊर्जाएं उसके शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक कार्यों के विभिन्न स्तरों पर प्रवाहित होती हैं, लेकिन,कर्म अज्ञानी और अनभिज्ञ लोगों को उलझन में डाल देता है और उनके जीवन को जटिल बना देता है। भौतिक जगत में रहने वाले अज्ञानी लोग इससे भ्रमित और विचलित हो जाते हैं।

इसलिए, कर्म के सिद्धांत को उन सभी अंधविश्वासों और रूढ़ियों से मुक्त किया जाना चाहिए जो वर्तमान में दुनिया में व्याप्त हैं, अधूरे ज्ञान और लोगों के बीच गलत व्याख्या के कारण, जो लोग कर्म के सिद्धांतों को वास्तविक दुनिया में सक्रिय और वस्तुनिष्ठ रूप से लागू करते हैं, उचित तर्क और सामान्य ज्ञान के माध्यम से, उनके लिए मन वास्तविकता का प्रकाशमान ज्ञान बन जाता है।

इस तरह, हम अपनी पसंद के हिसाब से सफलता या असफलता के नतीजे पाने के लिए जिम्मेदार बनेंगे और यह हमें उन चिंताओं से राहत देता है जिनसे आम आदमी रोजमर्रा की जिंदगी में गुजरता है। गहरी विडंबना यह है कि बुद्धिजीवी लोगों द्वारा विज्ञान का अधूरा अध्ययन किया जाता है, जिन पर मानव जाति का मार्गदर्शन करने का दायित्व है। दुनिया में सही तरक्की हो।

दुनिया में सही ढंग से प्रगति करें। यदि बुद्धिमान लोग प्रकृति की शक्तियों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें थियोसोफिया (प्राचीन ज्ञान) की वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से, तो अज्ञान पर विजय प्राप्त होगी और विकास बहाल होगा मानव जाति के लाभ के लिए। भौतिकवाद और उसका उपयोग युवा पीढ़ियों द्वारा अधिक परिपक्व ढंग से संभाला जाएगा।

अंत में, हमारी पूर्व अध्यक्ष, डॉ. एनी बेसेंट, अपनी पुस्तक 'कर्म का अध्ययन' में कहती हैं;

"कर्म के इस विज्ञान के साथ भी यही बात है, विद्यार्थी हमेशा सामान्यताओं के दायरे में नहीं रह सकता, उसे मूल नियम के उपविभागों का अध्ययन करना चाहिए, उसे जीवन की सभी परिस्थितियों में लागू करने का प्रयास करना चाहिए, उसे सीखना चाहिए कि यह कहाँ तक बांधता है और कैसे स्वतंत्रता संभव हो जाती है। उसे कर्म में प्रकृति का एक सार्वभौमिक नियम देखना सीखना चाहिए, और यह भी सीखना चाहिए कि प्रकृति के समग्र रूप में, उस पर विजय और शासन केवल आज्ञाकारिता से ही प्राप्त किया जा सकता है।1

.....

1. **"प्रकृति आज्ञाकारिता से जीती जाती है",**
एनी बेसेंट, एस्टडी इन कर्मा, सेकंड एडिशन, TPH, अड्यार, मद्रास, इंडिया, 1917, पेज 1.2

.....

हमें यह समझने की जरूरत है कि उनके (डॉ. एनी बेसेंट) शानदार सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक और दूसरे काम, उनकी दूर की सोच के लिए, भारत को आध्यात्मिक क्षेत्र में अपनी स्वाभाविक बढ़त वापस पाने के लिए बस एक तैयारी थी। उन्होंने कहा कि भारत की प्रतिभा किसी भी चीज से ज्यादा आध्यात्मिकता के लिए है, और भारत की भूमिका आध्यात्मिक ज्ञान के जरिए दुनिया को लीड करना और ऊपर उठाना है, जो उसकी कीमती विरासत है।

राधा बर्नियर
'प्रस्तावना'
डॉ. एनी बेसेंट के सम्मान में,
जाने–माने लोगों के लेक्चर, 1952–88 पेज 5.
द इंडियन सेक्शन, द थियोसोफिकल सोसाइटी, वाराणसी

.....

खुशबू अशोककुमार मिश्रा*

चार्ल्स वेबस्टर लेडबीटर का थियोसोफिकल सोसाइटी के माध्यम से मानवता के लिए योगदान

चार्ल्स वेबस्टर लेडबीटर (1854-1934), थियोसोफिकल सोसाइटी के एक प्रभावशाली व्यक्ति थे, जिन्होंने अपना जीवन मानव अस्तित्व के गूढ़ आयामों की खोज और प्राचीन ज्ञान को आधुनिक श्रोताओं तक पहुंचाने के लिए समर्पित कर दिया। लेडबीटर की शिक्षाएं उनकी पुस्तकों के माध्यम से व्यापक श्रोताओं तक पहुंचीं, जिससे जटिल अवधारणाओं को सरल बनाया गया और पाठकों में आध्यात्मिक खोज की भावना को बढ़ावा मिला। वे एक ब्रिटिश पादरी, तांत्रिक और प्रमुख थियोसोफिस्ट थे, जिन्होंने थियोसोफिकल सोसाइटी के माध्यम से गूढ़ दर्शन और आध्यात्मिक शिक्षाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका प्रभाव तांत्रिक दृष्टि, पुनर्जन्म, गूढ़ ईसाई धर्म और थियोसोफिकल शिक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में फैला हुआ था। विवादों का सामना करने के बावजूद, लेडबीटर की रचनाएं थियोसोफिकल चिंतन को आकार देना और विश्व स्तर पर आध्यात्मिक साधकों को प्रेरित करना जारी रखती हैं। उनके साहित्यिक कार्यों, जो अदृश्य लोकों की खोज और मानव आध्यात्मिक विकास की संभावनाओं से परिपूर्ण हैं, ने थियोसोफिकल आंदोलन के बौद्धिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गूढ़ ज्ञान और थियोसोफिकल शिक्षाओं का प्रचार–प्रसार

लेडबीटर के विपुल लेखन और व्याख्यानों ने थियोसोफिकल शिक्षाओं को व्यापक श्रोताओं तक पहुंचाने में आधारशिला का काम किया, जिससे गूढ़ ज्ञान के लोकप्रचार और व्याख्या में महत्वपूर्ण योगदान मिला। लेडवीटर ने आध्यात्मिक विकास, कर्म, पुनर्जन्म और अन्तर्ज्ञान पर जोर देकर आधुनिक थियोसोफी को आकार देने में अहम भूमिका निभाई। उनकी पुस्तकें, जैसे कि 'द एस्ट्रल प्लेन' (1895), 'द चक्रा' (The Chakras) (1927), और 'मैन व्हेन्स, हाउ एंड व्हिदर' (1913), ने आध्यात्मिक विषयों का अन्वेषण किया और सूक्ष्म ऊर्जा निकायों, मृत्यु के बाद जीवन और उच्च चेतना के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान की। आध्यात्मिक शरीर रचना और अस्तित्व के विभिन्न स्तरों पर उनकी शिक्षाओं ने थियोसोफी को आकार देने में मदद की।

* सदस्य, काशी तत्व सभा और सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, वसंत कन्या महाविद्यालय, थियोसोफिकल सोसाइटी, वाराणसी

लेडबीटर ने थियोसोफिकल विचार की रूपरेखा तैयार की। अपने कार्यों के माध्यम से, उन्होंने अदृश्य जगतों और मानव जीवन[1] पर उनके प्रभाव की व्यापक समझ प्रदान की। लेडबीटर ने अपनी दिव्यदृष्टि खोजों के माध्यम से मानव ऊर्जा शरीर को अनुभव किया और उसका मानचित्रण किया, चक्रों, उनके कार्यों और उनके संबंधित रंगों का विस्तृत विवरण प्रदान किया, जिसने थियोसोफिकल शिक्षाओं में एक नया आयाम जोड़ा और बाद की नई युग प्रथाओं को प्रभावित किया।

लेडबीटर के सूक्ष्म जगत के अन्वेषण ने थियोसोफिस्टों को भौतिक जगत से परे अस्तित्व के विभिन्न आयामों की समझ प्रदान की। उनके कार्यों में मृत्यु के बाद व्यक्तियों के अनुभवों का विस्तृत वर्णन है, जिसमें चेतना के विभिन्न स्तरों का वर्णन है, जिनमें देवाचन (स्वर्गीय अवस्था) और काम लोक (निचला सूक्ष्म जगत) शामिल हैं। उनके शोध ने भौतिक मृत्यु के बाद जीवन की निरंतरता में थियोसोफिकल विश्वास को मजबूत करने में मदद की, जिससे आध्यात्मिक विज्ञानों[2] पर व्यापक चर्चा में योगदान मिला।

दिव्यदृष्टि अनुसंधान और आध्यात्मिक विज्ञान

मृत्यु के बाद के जीवन, कर्म और पुनर्जन्म के बारे में उनकी दिव्य अंतर्दृष्टि ने अनगिनत व्यक्तियों की आध्यात्मिक मान्यताओं को आकार देने में मदद की है, जिससे आध्यात्मिक अध्ययन के क्षेत्र में एक अमिट विरासत बनी है। उन्होंने दिव्यदृष्टि को एक ऐसे साधारण व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया जो अपने भीतर कंपन की विशाल श्रृंखला में से एक और सप्तक को समझने की शक्ति विकसित करता है, और इस प्रकार सीमित बोध वाले लोगों की तुलना में अपने आसपास की दुनिया को अधिक देख पाता है। मानसिक और दिव्यदृष्टि क्षमताओं का दावा करते हुए, लेडबीटर ने सूक्ष्म और मानसिक स्तरों, पूर्व जन्मों और मृत्यु के बाद के जीवन पर व्यापक शोध किया। उन्होंने कहा, ''यह हमारी सबसे आम गलतियों[3] में से एक है कि हम यह मान लेते हैं कि हमारी बोध शक्ति की सीमा ही बोध करने योग्य सभी चीजों की सीमा है।'' उनका यह विश्वास कि दिव्यदृष्टि भौतिक जगत से परे देखने की क्षमता प्रदान करती है, आध्यात्मिक संरचना के थियोसोफिकल ज्ञान को प्रभावित करता है। आभाओं और चक्रों पर उनके शोध, विशेष रूप से 'द चक्र' में, ने बाद के नव युग और वैकल्पिक आध्यात्मिक आंदोलनों[4] की नींव रखी। सूक्ष्म ऊर्जा निकायों पर उनके अवलोकन आज भी आध्यात्मिक विज्ञान और आध्यात्मिकता पर समकालीन चर्चाओं में संदर्भित किए जाते हैं। उनके अंतर्दृष्टि संबंधी अध्ययन पूर्व जन्मों तक विस्तारित थे।

पुनर्जन्म, थियोसोफी में एक मौलिक अवधारणा है। एनी बेसेंट के साथ सह–लिखित पुस्तक मैन; व्हेन्स, हाउ एंड व्हिदर में लेडबीटर ने विभिन्न व्यक्तियों के पिछले जीवन का वर्णन किया, उन्हें ऐतिहासिक हस्तियों[5] से जोडा। पुनर्जन्म पर उनके काम ने थियोसोफिस्टों को कर्म के विकास और कई जन्मों के माध्यम से आत्मा की यात्रा पर एक गहरा दृष्टिकोण प्रदान किया।

जे. कृष्णमूर्ति और ऑर्डर ऑफ द स्टार को प्रभावित करना

लेडबीटर के सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक 1909 में जे. कृष्णमूर्ति की खोज थी। लेडबीटर का प्रभाव केवल सलाह देने से आगे तक बढ़ा, उसने कृष्णमूर्ति की नियति को मौलिक रूप से बदल दिया और ऑर्डर को थियोसोफिकल सिद्धांतों और कृष्णमूर्ति की नवोदित दार्शनिक अंतर्दृष्टि[6] के एक अनूठे मिश्रण से भर दिया। लेडबीटर का मानना था कि कृष्णमूर्ति भविष्य के विश्व शिक्षक हैं और उन्होंने पूर्व[7] में ऑर्डर ऑफ द स्टार के माध्यम से उन्हें तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेडबीटर द्वारा गुप्त पदानुक्रम का परिचय, जिसके स्वामी और प्रगतिशील दीक्षाएँ[8] शम्बाला के पौराणिक शहर में केन्द्रित थीं, पहली बार उनके लेखन में दिखाई दिया। ऑर्डर ऑफ द स्टार की स्थापना 1911 में कृष्णमूर्ति को आने वाले विश्व शिक्षक के रूप में उनके मिशन में समर्थन देने के लिए की गई थी,

जो कृष्णमूर्ति की नियति में लेडबीटर के गहन विश्वास को दर्शाता है। हालांकि बाद में कृष्णमूर्ति ने खुद को थियोसोफिकल सोसाइटी से दूर कर लिया और ऑर्डर को भंग कर दिया, लेकिन उनके प्रारंभिक जीवन पर लीडबीटर के प्रभाव ने आध्यात्मिक विचारों के प्रसार में योगदान दिया, जिसे कृष्णमूर्ति ने बाद में[9] अपने दर्शन में परिष्कृत और प्रचारित किया।

कृष्णमूर्ति के बारे में लेडबीटर की मान्यता उनके दिव्य दर्शन पर आधारित थी, जिसके बारे में उनका मानना था कि यह कृष्णमूर्ति की उच्च आध्यात्मिक क्षमता को दर्शाता है। ऑर्डर ऑफ द स्टार, जिसकी कल्पना कृष्णमूर्ति की प्रत्याशित भूमिका के लिए एक वाहन के रूप में की गई थी, थियोसोफिकल आकांक्षाओं का केंद्र बिंदु और कृष्णमूर्ति के संदेश[10] को प्रसारित करने का एक मंच बन गया। लेडबीटर ने एनी बेसेंट के साथ मिलकर ऑर्डर के स्ट्रक्चर को बनाने और उसके मैसेज को फैलाने में अहम भूमिका निभाई, जिसमें थियोसोफिकल आइडियल्स को कृष्णमूर्ति के बढ़ते स्पिरिचुअल विजन के साथ जोड़ा गया। लेडबीटर और एनी बेसेंट के गाइडेंस में, कृष्णमूर्ति को थियोसोफिकल प्रिंसिपल्स की शिक्षा मिली और वे विश्व शिक्षक के तौर पर अपनी भूमिका के लिए तैयार हुए। लेडबीटर की शिक्षाओं ने इस विचार को

बढ़ावा दिया कि इंसानियत का आध्यात्मिक विकास प्रबुद्ध लोगों या मास्टर्स के एक हायरार्की द्वारा गाइड किया जाता है जो इंसान की किस्मत को निर्देशित करते हैं।

उनके विजन ने कृष्णमूर्ति को मैत्रेय का रूप दिखाया, एक ऐसा कॉन्सेप्ट जो बौद्ध धर्म के अंत के समय की बातों में गहराई से जुड़ा हुआ था, जिससे धर्म का मकसद और पक्का हुआ और आध्यात्मिक मार्गदर्शन चाहने वाले अलग–अलग तरह के लोग आए।

कृष्णमूर्ति की शिक्षाएँ, शुरू में थियोसोफिकल सिद्धांतों से जुड़ी थीं, लेकिन धीरे–धीरे अलग हो गईं, और तय रास्तों और बाहरी अधिकारियों के बजाय व्यक्तिगत अनुभव और खुद को खोजने पर जोर दिया। कृष्णमूर्ति का संदेश, जो सीधे अनुभव और बाहरी अधिकारियों को नकारने पर केंद्रित था, आध्यात्मिक आजादी चाहने वाले बढ़ते लोगों के साथ जुड़ा, और संगठित धर्म और पारंपरिक विश्वास प्रणालियों के स्थापित नियमों को चुनौती दी। हालाँकि, कृष्णमूर्ति ने आखिरकार लेडबीटर का रास्ता नकार दिया; उनकी शुरुआती ट्रेनिंग ने आत्म–जांच और आध्यात्मिक ज्ञान[11] पर उनकी बाद की शिक्षाओं को प्रभावित किया।

एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन स्थापित करना

लेडबीटर ने कई थियोसोफिकल स्कूलों की सह–स्थापना की, जो शिक्षा के लिए एक समग्र और आध्यात्मिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देते थे। भारत, श्रीलंका और ऑस्ट्रेलिया में थियोसोफिकल एजुकेशन ट्रस्ट और थियोसोफिकल स्कूल, छात्रों को ऐसी शिक्षा देने की उनकी कोशिशों का हिस्सा थे जिसमें पारंपरिक विषयों के साथ–साथ आध्यात्मिक शिक्षाएँ भी शामिल हों। इन संस्थानों का मकसद नैतिक और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना था, और थियोसोफिकल सिद्धांतों को एकेडमिक पाठ्यक्रम में शामिल करना था। थियोसोफिकल शिक्षा में उनका योगदान उनकी विरासत का एक अहम हिस्सा बना हुआ है।

उनके खास योगदानों में से एक सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में थियोसोफिकल स्कूल की स्थापना थी। इस स्कूल ने बौद्धिक और आध्यात्मिक, दोनों तरह की क्षमताओं के विकास पर जोर दिया, जिससे ऐसा माहौल बना जहाँ छात्र पारंपरिक शिक्षा लेते हुए गूढ़ विषयों को भी समझ सकें।

शिक्षा में उनकी कोशिशों ने थियोसोफिस्ट की एक ऐसी पीढ़ी बनाने में मदद की, जिन्होंने आध्यात्मिक जागरूकता को रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल किया।

धार्मिक और रहस्यमयी सोच में योगदान

लेडबीटर के काम ने रहस्यमयी विचारों को लोकप्रिय बनाया और यह

बहुत बड़े दर्शकों तक पहुँचा, जिससे वह अपने पाठ्यक्रम अनुयायी जिनमें एनी बेसेंट[12] भी शामिल थीं, के बीच रहस्यमयी सोच, मानसिक घटनाओं और दूर के अनुभवों के एक जाने–माने जानकार बन गए। लेडबीटर के दावों में अक्सर असाधारण मानसिक क्षमताएँ शामिल होती थीं, जैसे अपने दिमाग से एटम में घुसना और दूसरे ग्रहों की खोज करना।

पृथ्वी पर शारीरिक रूप से रहते हुए। उन्होंने मास्टर्स या महात्माओं, सुपरमैन के साथ नियमित संचार पर जोर दिया, जो इस ग्रह के गुप्त पदानुक्रम का गठन करते हैं, और दावा किया कि उन्होंने भारत में मद्रास[13] में अपने बिस्तर पर लेटे हुए सीलोन में सबरांगानुवा की खानों से दूसरे तत्व के परमाणुओं को खोदने के लिए समुद्री आत्माओं को भेजा था।

लेडबीटर द्वारा गुप्त पदानुक्रम अवधारणा का विकास, गोबी रेगिस्तान में शम्बाला के पौराणिक शहर में केंद्रित (हालांकि कुछ अन्य का मानना है कि यह शहर हिमालयी / तिब्बत क्षेत्र में स्थित है), अपने मास्टर्स और प्रगतिशील दीक्षाओं के साथ, पहली बार उनके लेखन में दिखाई दिया और बाद में उनके द्वारा लोकप्रिय किया गया। उन्होंने कहा कि ये मास्टर्स, प्रबुद्ध प्राणी जो मानवता के आध्यात्मिक विकास का मार्गदर्शन करते हैं, उनसे ध्यान और गुप्त प्रथाओं के माध्यम से संपर्क किया जा सकता है, गुप्त पदानुक्रम की उनकी अभिव्यक्ति ने आध्यात्मिक साधकों के लिए एक संरचित मार्ग पेश किया, जिसमें उन्नत आध्यात्मिक प्राणियों[14] से दीक्षा और मार्गदर्शन के महत्व पर बल दिया गया।

गूढ़ ईसाई धर्म में उनका योगदान पर्याप्त था। उन्होंने तर्क दिया कि ईसाई शिक्षाओं में थियोसोफी[15] के साथ संरेखित छुपे हुए रहस्यमय अर्थ निहित हैं। द इनर लाइफ (1911) और द हिडन साइड ऑफ थिंग्स (1913) में, उन्होंने रोजमर्रा की जिंदगी के अनदेखे आध्यात्मिक आयामों की खोज की। उनके द साइंस ऑफ द सैक्रामेंट्स (1920) ने ईसाई अनुष्ठानों की आध्यात्मिक ऊर्जा सक्रियण[16] के रूप में पुनर्व्याख्या की। ईसाई कथाओं को गूढ़ व्याख्याओं से भरकर; लेडबीटर ने व्यक्तियों को अपनी ईसाई पृष्ठभूमि को थियोसोफिकल अवधारणाओं के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान की,

खास काम और कोटेशन

सी.डब्ल्यू. लेडबीटर ने कई असरदार किताबें लिखीं, जिनमें द एस्ट्रल प्लेन, क्लेयरवॉयंसए द हिडन साइड ऑफ थिंग्स, द चक्रसए द इनर लाइफ द साइंस ऑफ द सैक्रामेंट्स, थॉट–फॉर्म्स (एनी बेसेंट के साथ मिलकर लिखी गई) और ए टेक्स्टबुक ऑफ थियोसॉफी शामिल हैं।

वैश्विक स्तर पर थियोसोफी का विस्तार

थियोसोफिकल सोसाइटी के एक नेता के रूप में लेडबीटर ने दुनिया भर में, विशेष रूप से भारत, ऑस्ट्रेलिया और यूरोप में थियोसोफी को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके व्याख्यानों और लेखों ने थियोसोफिकल विचारों के विस्तार में योगदान दिया, जिसने बाद के न्यू एज आंदोलनों, वैकल्पिक आध्यात्मिकता और गुप्त अध्ययनों को प्रभावित किया।

लेडबीटर की थियोसोफिकल व्याख्याओं ने सार्वभौमिक भाईचारे और गूढ़ ईसाई धर्म के विचार को बढ़ावा दिया, जो[17] पारंपरिक धार्मिक सिद्धांतों से परे आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि चाहने वाले व्यक्तियों के साथ प्रतिध्वनित हुआ। धार्मिक और गुप्त विचारों में उनका योगदान उनकी दूरदर्शी जांच, गूढ़ अवधारणाओं को लोकप्रिय बनाने और गूढ़ ईसाई धर्म की वकालत में निहित है। उन्होंने आध्यात्मिक साधकों के लिए एक संरचित मार्ग प्रदान किया, जिससे थियोसोफिकल[18,19] सोसाइटी और व्यापक गुप्त आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में उनका स्थान मजबूत हुआ।

सन्दर्भ :

1. बेसेंट, ए., और लेडबीटर, सी. डब्ल्यू. (1913). मैन; व्हेन्स, हाउ एंड व्हेयर. थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस, इलिनोइस. यहां से लिया गया;
hps://archive-org/details/manwhencehowandw031919mbp
2. टिलेट, जी. (1982). द एल्डर ब्रदर; ए बायोग्राफी ऑफ चार्ल्स वेबस्टर लेडबीटर रूटलेज एंड केगन पॉल. यहां से लिया गया;
hps://doi-org/10-4324/9781315651866 ¼ist 56-76½.
3. लेडबीटर, सी. डब्ल्यू. (1899). क्लेयरवॉयंस. थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस. यहां से लिया गया;
hps://www-anandgholap-net/Clairvoyance&CWL-htm
4. लेडबीटर, सी. डब्ल्यू. (1927). द चक्रास. थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस, मद्रास.
hps://www-theosophy-world/resource/ebooks/chakras&c&wleadbeater से लिया गया
5. बेसेंट, और लेडबीटर, सी. डब्ल्यू. (1913), मैन; व्हेन्स, हाउ एंड व्हेयर, ऑप. सिट.
6. ओगलट्री, ए. पी. (2007). पीस प्रोफाइलरू जिद्दू कृष्णमूर्ति.
Peace Review, 19(2), 277–280. Retrieved from:
hps://doi-org/10-1080/10402650701354032 (पेज 277–280) से लिया गया।
7.कृष्णमूर्ति, जे. (1972). फ्रीडम फ्रॉम द नोन. कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया,

https://ia600301.us.archive.org/6/items/FreedomFromTheKnownJ.Krishnamur/Freedom%20From%20The%20Known%20%20J.%20Krishnamur.pdf
8. टिलेट, जी. जे. (1986). चार्ल्स वेबस्टर लेडबीटर 1854–1934: एक बायोग्राफिकल स्टडी hps://ses-library-usyd-edu-au/handle/2123/1623 (पेज 186–242) से लिया गया।
9. टिलेट, जी. (1982), द एल्डर ब्रदर; ए बायोग्राफी ऑफ चार्ल्स वेबस्टर लेडबीटर, ऑप. सिट. (पेज 103–113)।
10. जज, आर. एस. (2018)। डस्की काउंटेनेंस; एम्बिवेलेंट बॉडीज एंड डिजायर्स इन द थियोसोफिकल सोसाइटी। जर्नल ऑफ द हिस्ट्री ऑफ सेक्सुअलिटी, 27 (2)। http://www-jstor-org/stable/44862262 (पेज 264–293) से लिया गया।
11. कृष्णमूर्ति, जे. (1972), फ्रीडम फ्रॉम द नोन, op. cit.
12. टिलेट, जी. जे. (1986), चार्ल्स वेबस्टर लेडबीटर 1854–1934, op. cit.
13. Ibid
14. Ibid
15. लेडबीटर, सी. डब्ल्यू. (1913). द हिडन साइड ऑफ थिंग्स. थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस, मद्रास. यहाँ से लिया गया;
https://archive-org/details/in-ernet-dli-2015-201477/page/407/mode/2up
16. lgadjanian, A. (2014). The New Age of Russia: Occult and Esoteric Dimensions [Review of The New Age of Russia: Occult and Esoteric Dimensions, by Birgit Menzel, Michael Hagemeister, & Bernice Glatzer Rosenthal]. Nova Religio: The Journal of Alternative and Emergent Religions, 17(3). Retrieved from:
https://doi.org/10.1525/nr.2014.17.3.136 (pp.136–138).
17. जज, आर. एस. (2018); op- cit-
18. लेहमैन, जे. के. (1998). 20वीं सदी में ग्रेट ब्रिटेन और नॉर्थ अमेरिका में ज्योतिष के फिर से शुरू होने पर थियोसोफिकल आंदोलन का असर (डॉक्टरल डिसर्टेशन, कॉनकॉर्डिया यूनिवर्सिटी).
19. वागर, एस. ई. सी. (2005). 1920 के दशक में थियोसोफिकल सोशलिस्ट ओकानागन; जैक लोगी के सोशल इश्यूज समर कैंप्स (डॉक्टरल डिसर्टेशन, साइमन फ्रेजर यूनिवर्सिटी

समाचार और नोट्स

असम

(1 अक्टूबर 2024 से 31 दिसंबर, 2025 तक पहली तिमाही की रिपोर्ट): टीएस के महत्वपूर्ण दिन;

इस अवधि के दौरान असम थियोसोफिकल फेडरेशन द्वारा दो शुभ दिन,

एनी बेसेंट दिवस और स्थापना दिवस मनाए गए। प्रागज्योतिषपुर थियोसोफिकल लॉज के अनुरोध के अनुसार, इस वर्ष एटीएफ ने 1 अक्टूबर, 2025 को लॉज के ''किरण हॉल'' में एनी बेसेंट दिवस मनाया। भाई किरण चंद्र बुरागोहेन ने बैठक की अध्यक्षता की। एटीएफ के गणमान्य लोगों के अलावा, प्रागज्योतिषपुर लॉज के सदस्यों ने बैठक में भाग लिया।

एटीएफ के अध्यक्ष डॉ बिपुल शर्मा ने थियोसोफिकल सोसाइटी के 150वें स्थापना दिवस को मनाने के लिए 17 नवंबर, 2025 को आयोजित बैठक की अध्यक्षता की। बैठक एटीएफ मुख्यालय में हुई। अरुणिमा बरुआ, भाई किरण चन्द्र बोरागोहेन और भाई डॉ. जगन्नाथ पटगिरी ने इस अवसर पर बात की। एटीएफ के अंतर्गत विभिन्न लॉज ने भी इन दिनों को अपने–अपने स्थलों पर पूरे सम्मान के साथ मनाया।

वार्षिक आम बैठक : एटीएफ की 48वीं एजीएम 14 दिसंबर, 2025 को एक दिवसीय कार्यक्रम के साथ सरकारी पेंशनर भवन ऑडिटोरियम, चांदमारी, गुवाहाटी में आयोजित की गई। समारोह की शुरुआत सुबह 8:30 बजे असम महासंघ के अध्यक्ष डॉ. बिपुल शर्मा द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुई। डॉ. बिपुल शर्मा ने खुले सत्र की अध्यक्षता की, जो सुबह 9:30 बजे एटीएफ के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्र प्रवाह भुयान द्वारा आयोजित धर्मों की प्रार्थनाओं के साथ शुरू हुआ, जिसके बाद अध्यक्ष द्वारा शुरू की गई सार्वभौमिक प्रार्थना हुई। इसके बाद, बहन अरुणिमा बरुआ ने भाई प्रदीप एच. गोहिल, अध्यक्ष, भारतीय अनुभाग और अन्य महासंघों के गणमान्य व्यक्तियों से प्राप्त अभिवादन को पढ़ा।

सचिव रमेश महंत ने वार्षिक गतिविधि रिपोर्ट प्रस्तुत की और फिर भाई प्रेम नारायण दास की अनुपस्थिति में उन्होंने लेखा द्वारा परीक्षित लेखा रिपोर्ट प्रस्तुत की। दोनों रिपोर्टों को सामान्य निकाय द्वारा अनुमोदित किया गया।

भाई डॉ. बिपुल शर्मा ने भाई बिनय कुमार शर्मा द्वारा संपादित असम थियोसोफिकल फेडरेशन की वार्षिक द्विभाषी स्मारिका Jnan Jeuti (36वां अंक) का विमोचन किया। एजीएम का विषय था ''आध्यात्मिकता और भाईचारा।''
प्रसिद्ध लेखक और साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता डॉ. जयंत माधब बोरा ने मुख्य अतिथि के रूप में बैठक में भाग लिया। डॉ. बोरा का परिचय एटीएफ के

प्रचार अधिकारी भाई गोकुल चंद्र डेका ने दर्शकों से कराया। इसके बाद डॉ. बोरा ने एजीएम के विषय पर मुख्य भाषण दिया। सुरेन गोस्वामी ने एक लोकगीत पेश किया।

इसके बाद, एजेंडा के मुताबिक, मौजूदा एग्जीक्यूटिव कमेटी की अवधि खत्म होने पर उसे भंग कर दिया गया और अगले तीन साल (2025-26 से 2027–28) के लिए 15 सदस्यों की एक नई एग्जीक्यूटिव कमेटी बनाई गई, जिसमें डॉ. बिपुल शर्मा प्रेसिडेंट और डॉ. चंद्र प्रभा भुयान, भाई उमा शंकर साहू और डॉ. दीनमणि भगवती वाइस प्रेसिडेंट, भाई रमेश महंत सेक्रेटरी, भाई किरण चंद्र बुरागोहेन जॉइंट सेक्रेटरी, भाई प्रदीप कुमार नाथ ट्रेजरर, भाई गोकुल चन्द्र डेका पब्लिसिटी ऑफिसर, भाई विनय कुमार शर्मा एडिटर और बहन गीतू पाठक भगवती लाइब्रेरियन बनीं। इसके अलावा, पांच और लोगों को एग्जीक्यूटिव कमेटी का सदस्य चुना गया।

भाई किरण चौधरी बुरागोहेन ने धन्यवाद दिया। AGM का समापन भाई महेंद्र नाथ सरमा की प्रार्थना के साथ हुआ।

दिल्ली

राष्ट्रीय व्याख्याता डॉ. राजीव गुप्ता ने 'कारण शरीर' विषय पर एक व्याख्यान दिया, जो 10 जनवरी 2026 को शंकर लॉज की भौतिक बैठक में आयोजित किया गया था।

राष्ट्रीय व्याख्याता बहन विभा सक्सेना ने 'एक वास्तविकता के आंदोलन – गुप्त सिद्धांत का अध्ययन– भाग –2' पर ऑनलाइन अध्ययन किया, यह 17 जनवरी को आयोजित किया गया था।

भाई सौरभ रंजन द्वारा 24 जनवरी को शंकर लॉज की भौतिक बैठक में दिए गए व्याख्यान का विषय 'विचार शक्ति' था।

यू.पी. और उत्तराखंड

भाई बी.के. पांडे ने 'मानव प्रगति और पूर्णता का आदर्श' विषय पर एक व्याख्यान दिया, जो 7 जनवरी 2026 को लखनऊ के धर्म लॉज में आयोजित किया गया था। 14 जनवरी को वहां आयोजित उनकी अन्य वार्ता 'उद्देश्य, उपयोग और नैतिकता का आधार' पर थी। 28 जनवरी को प्रमिल द्विवेदी की वार्ता 'मनुष्य और उसके शरीर' पर थी।

बहन वसुमती अग्निहोत्री ने 25 जनवरी को प्रज्ञा लॉज में 'Practical Occultism' पर एक व्याख्यान दिया। इस पर चर्चा हुई।

भाई प्रवीण मेहरोत्रा ने 15 जनवरी को आगरा के निर्वाण लॉज में 'अङ्यार डायरी' के बारे में बात की। उसी स्थान पर आयोजित अन्य दो वार्ताएं 22 जनवरी को भाई आर.एस. ओझा द्वारा दिए गए 'सूर्य नमस्कार' विषय पर और

29 जनवरी को भाई आर.एल. तिवारी द्वारा 'थियोसोफी और भगवद गीता' विषय पर थीं। इसके अलावा, 8 जनवरी को लॉज द्वारा 'थियोसोफी' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया था।

भाई अजय राय द्वारा सर्वहितकारी लॉज, गोरखपुर में दिए गए दो व्याख्यान 'तुलनात्मक धर्म' और 'थियोसोफिस्ट का कर्तव्य' विषयों पर थे यह प्रवचन 7 और 21 जनवरी को आयोजित किए गए थे। भाई अरविंद राय ने 14 जनवरी को 'ब्रह्मांड की उत्पत्ति'(Cosmogenesis) पर प्रवचन दिया और भाई एस.बी.आर. मिश्रा का प्रवचन 28 जनवरी को 'पारमिता' विषय पर था। इसके अलावा, भाई एस.बी.आर. मिश्रा ने 14 जनवरी को सनातन धर्म लॉज में 'थियोसोफी के मूल सिद्धांत' की व्याख्या की।

4 जनवरी को गोरखपुर जिले के जगदीशपुर लॉज में भाई विंध्याचल मिश्रा ने 'ब्रह्मविद्या और भगवद गीता' विषय पर प्रवचन दिया।

30 जनवरी को ब्रह्मविद्या लॉज जिगना भियानं (जिला गोरखपुर) में भाई वशिष्ठ मणि त्रिपाठी ने 'आत्म–साक्षात्कार का मतलब और उद्देश्य' समझाया।

29 जनवरी को बांसगांव के चतुर्भुज लॉज में भाई सुधीर कुमार ने 'कठोपनिषद में जीवात्मा का विचार' विषय पर प्रवचन दिया।

8 जनवरी को लक्ष्मी नारायण लॉज, बासुपुर (जिला गोरखपुर) में 'प्राण प्रिंसिपल' (Prana Principle) विषय पर एक ग्रुप डिस्कशन हुआ।

जनवरी महीने में नारायण लॉज, मिर्जापुर ने थियोसॉफी के पाठ और द की टू थियोसॉफी किताबों की स्टडी करवाई।

11 जनवरी को कानपुर के चौहान लॉज की मीटिंग में स्वर्गीय भाई एस.एस. गौतम को श्रद्धांजलि दी गई।

18 और 25 जनवरी को लॉज में बहन शैली सिंह ने 'शोक सन्तप्तों के लिए' विषय पर और बहिन राज बृजपुरिया ने 'बौद्ध मेडिटेशन' पर बात की।

4 जनवरी को नोएडा में लॉज की देखरेख में 'विवेक चूडामणि' किताब की स्टडी हुई और 18 जनवरी को लॉज ने एक ग्रुप डिस्कशन ऑर्गनाइज किया।

बहन इंदु सूद ने 18 जनवरी को नोएडा के मैत्रेय लॉज में एनी बेसेंट की किताब 'डॉक्ट्रिन ऑफ द हार्ट' की स्टडी करवाई।

सुव्रलीना मोहंती ने के. सच्चितानंद की किताब 'बी ए लैम्प इनटू योरसेल्फ' की स्टडी करवाई। यह 11 जनवरी को गाजियाबाद में प्रयास लॉज की देखरेख में हुआ था। और फिर उन्होंने 18 जनवरी को उसी जगह पर भारत समाज पूजा करवाई और इसका महत्व समझाया। इसके अलावा, 25 जनवरी

को लॉज की देखरेख में 'एम्बलम ऑफ थियोसोफी' (Emblem of theosophy) टॉपिक पर सिस्टर सुषमा श्रीवास्तव ने एक ऑनलाइन टॉक दी।

सिस्टर अर्चना पांडे ने 'एस्ट्रल प्लेन' टॉपिक पर टॉक दी, जो प्रयागराज के आनंद लॉज में 11 और 25 जनवरी को दो सेशन में हुए।

नेशनल डायरेक्टर, TOS (भारत) के भाई के. शिव प्रसाद ने 30 जनवरी 2026 को सेक्शन हेडक्वार्टर में काशी तत्व सभा की देखरेख में हुई मीटिंग में एक टॉक दी। उनके टॉक का विषय 'बौद्ध धर्म और थियोसोफी' था और उन्होंने विश्वास और अहसास के मामले में दोनों के बीच की करीबी के बारे में बताया। बौद्ध धर्म और थियोसोफी दोनों ही इंसानियत की भलाई के लिए शांति और दया बढ़ाने की जरूरत पर जोर देते हैं। हालाँकि बौद्ध धर्म एशिया में पैदा हुआ था, लेकिन यह दुख और खुद को बदलने के मजबूत संदेश के साथ पूरी दुनिया में पहुँचा। पौधों, जानवरों के प्रति हमदर्दी और पूरी प्रकृति के प्रति सम्मान, उस समय मौजूद कम्युनिकेशन के तरीकों के बावजूद बौद्ध धर्म को दुनिया भर में फैलाने की ड्राइविंग फोर्स है। थियोसोफिकल सोसाइटी के फाउंडर मैडम ब्लावात्स्की और भाई एच.एस. ओलकॉट ने थियोसोफी को यूनिवर्सल बेसिस पर बढाने के लिए बुद्ध की शिक्षाओं को मजबूती से फॉलो किया। थियोसोफी, जीवन में एकता, आध्यात्मिक खुद को बदलना और हमेशा रहने वाले ज्ञान को समझने के मिशन के साथ, थियोसोफिकल सोसाइटी के मजबूत पिलर के साथ इंसानियत की सेवा के लिए आगे बढ़ रही है। बौद्ध धर्म और थियोसोफी दोनों के प्रिंसिपल, आइडियल और टीचिंग आज के जमाने में अलग–अलग धर्मों के झगड़ों मैटेरियलिस्टिक ग्रोथ, इकोलॉजी के प्रति क्रूरता और स्ट्रेसफुल जिंदगी की वजह से ज्यादा जरुरी और जरुरी हो गए हैं।

23 जनवरी को वाराणसी के एनी बेसेंट लॉज ने 'त्योहारों के लिए थियोसोफिकल अप्रोच – सिंबॉलिज्म' टॉपिक पर एक ग्रुप डिस्कशन ऑर्गनाइज किया था।

भाई रवि प्रकाश ने 7 जनवरी को रामपुर में 'थियोसोफी के पाठ' (Theosophy ke path) किताब का ओवरव्यू किया।

पब्लिक टॉकः

'नो योरसेल्फ ग्रुप' ने 8 जनवरी को भाई एस.के. पांडे की 'विचार की उत्पत्ति' विषय पर ऑनलाइन वार्ता का आयोजन किया। और फिर 14 और 15 जनवरी को दो सत्रों में 'विचार स्थानांतरण' विषय पर संबोधित किया।

पीएमसी ग्रुप ने 'थियोसोफी का परिचय' विषय पर बहन इंदु सूद की ऑनलाइन वार्ता का आयोजन किया।

छात्रों / शिक्षकों / युवाओं को संबोधनः

भाई यू.एस. पांडे ने गोवा में गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट, साइंस एंड कॉमर्स के छात्रों/शिक्षकों को संबोधित किया। 23 जनवरी को दिए गए इस वार्ता का विषय था 'जीवन का विज्ञान, मानव जीवन का उद्देश्य और जीने की कला'।

अन्य संघों में योगदानः

भाई यू.एस. पांडे ने 11 जनवरी को दावणगेरे लॉज (कर्नाटक संघ) में 'जागरूकता के माध्यम से आत्म–परिवर्तन' पर एक सत्र आयोजित किया। फिर, उन्होंने 'गूढ़ दर्शन की नींव' पर अध्ययन किया जो 12 और 19 जनवरी को बेंगलुरु के मल्लेश्वरम लॉज में दो सत्रों में आयोजित किया गया उन्होंने 17 जनवरी को विजयनगर लॉज में 'परब्रह्म' विषय पर एक व्याख्यान दिया और 18 जनवरी को बैंगलोर सिटी लॉज में आयोजित 'हमारे जीवन को थियोसोफी करना' के बारे में बात की।

गोवा लॉजः सत्यम लॉज गोवा के अध्यक्ष भाई प्रीतम कल्याणकर के निमंत्रण पर, 'थियोसोफी – जीवन का विज्ञान और जीने की कला' विषय पर एक कार्यशाला भाई यू.एस. पांडे द्वारा 24 से 26 जनवरी तक आयोजित की गई थी।

बहन सुषमा श्रीवास्तव की 31 जनवरी को शंकर लॉज (दिल्ली फेडरेशन) द्वारा आयोजित ऑनलाइन वार्ता 'सात किरणें' विषय पर थी।

भारतीय अनुभाग कार्यक्रम में योगदानः

भारतीय अनुभाग सम्मेलन–II 1 जनवरी को अड्यार में आयोजित किया गया था जिसमें भाई यू.एस. पांडे की पुस्तक 'थियोसोफी के पाठ' (Theosophy ke path) का अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष भाई टिम बॉयड द्वारा विमोचन किया यह 16 जनवरी को हुआ था।

बहन विभा सक्सेना ने 'लेटर फ्रॉम द मास्टर्स ऑफ विजडम' किताब के लेटर नंबर 33 से 37 की ऑनलाइन स्टडी की। यह 16 जनवरी को हुई।

सिस्टर सुषमा श्रीवास्तव ने 18 और 25 जनवरी को 'फर्स्ट प्रिंसिपल्स ऑफ थियोसोफी' (सी. जिनराजदास की) किताब की ऑनलाइन स्टडी की।

इंटरनेशनल कन्वेंशनः 4 जनवरी को भाई शिखर अग्निहोत्री और कैटालिना (Catalina) द्वारा ग्लोबल मेडिटेशन किया।

नया लॉजः जगदीशपुर गांव (जिला गोरखपुर) में एक नया लॉज शुरू किया गया है।

शांति को प्राप्त हुए कानपुर के श्री श्याम सिंह गौतम (डिप्लोमा नंबर 57863), गोरखपुर की श्रीमती भानमती मिश्रा (डिप्लोमा नंबर 97227) और इटावा के श्री राम प्रताप सिंह (डिप्लोमा नंबर 55885) क्रमशः 10, 11 और 19 जनवरी 2026 को शांति को प्राप्त हुए।

सपोर्ट कन्वेन्शन

31 दिसंबर 2025 से 4 जनवरी 2026 तक अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय, अड्यार में आयोजित 150वें अधिवेशन का विषय था 'एक विश्व, एक जीवन; एक नई मानवता की भावना'। इस विषय पर सपोर्ट अधिवेशन भारतीय अनुभाग और काशी तत्व द्वारा संयुक्त रूप से भारतीय अनुभाग मुख्यालय, वाराणसी में 31 दिसंबर 2025 और 4 जनवरी 2026 को आयोजित किया गया था। दोनों दिन की बैठकें 31 दिसंबर को श्रीमती भारती चट्टोपाध्याय और 4 जनवरी को श्रीमती मंजू सुंदरम द्वारा नेतृत्व की गई सार्वभौमिक प्रार्थना के साथ शुरू हुईं। प्रभारी अध्यक्ष भाई एस.एल. दर ने दोनों दिन सदस्यों का स्वागत किया।

श्रीमती मंजू सुंदरम ने 31 दिसंबर को बोलते हुए कहाः अंतरिक्ष यान में बैठे हुए, अंतरिक्ष से पृथ्वी ग्रह को निहारते हुए, अंतरिक्ष यात्रियों ने अपने–अपने शहरों या देशों की तलाश नहीं की, बल्कि एक दिव्य, अद्भुत घटना को देखा! विस्मय से भर कर, अवाक आश्चर्य से, उन्होंने पृथ्वी को उसकी संपूर्णता, एकता में, उसकी सारी भव्यता और महिमा के साथ देखा, शायद शब्दों में उनकी उमड़ती भावनाओं को व्यक्त करना संभव नहीं था!

अब पूरी तस्वीर, दुख की बात है कि, बहुत डरावनी और दिल दहला देने वाली है और अब समय आ गया है कि हम इसके बारे में कुछ करें, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए!

इस साल इंटरनेशनल कन्वेंशन की थीम, किसी को भी अपने होने की गहराई में जाने, पूरी ईमानदारी और सच्चाई के साथ अपनी सोच को समझने, फिर खुद से सोचने और सवाल करने के लिए मजबूर करती है कि हम दुनिया को आज की हालत में लाने के लिए कितने जिम्मेदार हैं – बँटी हुई, बिखरी हुई, टुकड़ों में टूटी हुई, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए।

हमारी पक्की उम्मीदें और दुआएँ 'सपने को सच करने' के लिए, एक दुनिया, एक जीवन के सपने को, हमें अपने पूरे होने, अपनी सोच, अपने विचारों और कामों के पूरे स्ट्रक्चर को पूरी तरह से बदलना होगा।

पहले से ही टिमटिमाती लौ को बुझने से बचाने और उसकी रक्षा करने के लिए, आइए हम, सिर्फ अलग–अलग लोगों के तौर पर नहीं, बल्कि एक पूरे के तौर पर, इस बँटी हुई दुनिया को एक दुनिया, एक सुरक्षित जगह बनाने के लिए अपनी पूरी ईमानदारी से कोशिश करें, सिर्फ इंसानों के लिए ही नहीं, बल्कि सभी जीवों के लिए।

आइए, यहीं और अभी से शुरुआत करें!

TOS इंडिया की नेशनल सेक्रेटरी और काशी तत्व सभा की प्रेसिडेंट डॉ. कुमुद रंजन ने 4 जनवरी को कहा कि इंटरनेशनल कन्वेंशन की थीम का